

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ପରିବହନ କାର୍ଯ୍ୟ ଦେଖିବାରେ ଏହାର ଅଧିକାରୀ ପରିବହନ କାର୍ଯ୍ୟ କାମକାଳୀଙ୍କ ପରିବହନ କାର୍ଯ୍ୟ କାମକାଳୀଙ୍କ ପରିବହନ କାର୍ଯ୍ୟ କାମକାଳୀଙ୍କ

ਤੁਮਹਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਵਿਖੇ ਸਾਡੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹੋ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਵਿਖੇ ਵੱਡੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹੋ। — ਸਿੰਘ

१ प्रथम प्रकार तो अजिभव लेनी विद्युत शक्ति दे सकत अपभाव सहन करी शक्ति प्रयु अलिमान निष्पाप विनाशी अन

कृष्ण ने कहा- अवश्यकतावाले सर्वेषां निरदेहकर्ता । द्वयवर्धयो यदा जीव  
अवश्यकतावाले अथंता सातामां श्रीभगवत्सु अप्यत्यु करे  
विषे भावेभेष अथंता न च्छु इक ता याथाभातना । नवृत्ते कुं श्रेष्ठः ॥

तार्थ स नियमे (७) अर्थ—अहंता भ्रष्टानि तास थे एते प्रकारे अहंकारी रहित अहं कार्य द्वये अहं द्वये प्राणानां रहनादे

०३४८ अन्तर्राष्ट्रीय विकास के लिए भारतीय विदेशी वित्तीय संस्थानों का उपयोग

॥ लोकप्रसादोत्तमः ॥ निम् ॥ इ ॥ रुद्र ॥ उद्गतः ॥ विना ॥ अन्यथां ॥ मारु ॥ रुद्र  
पूर्णहृषी ॥ लोकप्रसादोत्तमः ॥ उद्गतः ॥ विना ॥ प्रसादोत्तमः ॥ विना ॥ रुद्र ॥ लोकप्र  
सादोत्तमः ॥ विना ॥ रुद्र ॥

“ताता न पापन् यजुर्वलं सहृदयं उर्मा दोषं तु पृथुं आश्रयतवाणी  
कथम् ते नन्धी छिपातो. ते विष्णु क्षमा भूयशाखा स्वरदपलभ्यते उद्देश्ये ते उ  
( लोक वैद वर्जने सबरे चन्द्रनन देखे त्रास चार न जिय चेरा तजेरे स  
उर्मा सहित विनाश ) अर्थं योर हैथ तेनी ओरी करदागा आसक्ति

ਕੁਝ ਹੈ ਜੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਆਪਣੀ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਣਾ ਅਤੇ ਉਸ ਵਿੱਚ ਵੱਡੀ ਮਾਤਰਾ ਵਿੱਚ ਬੁਨਿਆਦੀ ਗੁਣਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨਾ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਣਾ ਅਤੇ ਉਸ ਵਿੱਚ ਵੱਡੀ ਮਾਤਰਾ ਵਿੱਚ ਬੁਨਿਆਦੀ ਗੁਣਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨਾ।

କାହାରେ ଦେଖିଲୁ ନାହିଁ ତାଙ୍କୁ ପାରିବା  
କାହାରେ ଦେଖିଲୁ ନାହିଁ ତାଙ୍କୁ ପାରିବା

ज्ञानसंग्रहालय विद्यालय के बाहर आदि अधिकारी विदेशी विद्यार्थी एवं विद्यार्थियों को इस सम्प्रदाय का अध्ययन करने के लिए आवश्यकता है। इसलिए इस सम्प्रदाय का अध्ययन करने के लिए विद्यालय के बाहर आदि अधिकारी विद्यार्थी एवं विद्यार्थियों को इस सम्प्रदाय का अध्ययन करने के लिए आवश्यकता है।

ପ୍ରମାଣିତ ହୁଏଇବାକୁ ପରିବର୍ତ୍ତନ କରିବାକୁ ପରିଚୟ ଦିଆଯାଇଛି ।

ଅଟେ କୁଳ୍ପା ଦୂର୍ମା ଗୋପୀନେ ଏକବଳ ଆଗେ ନାହିଁ ନାହିଁ ଯାଏ ତାହିଁରେ  
ଧନୀବଳମାତ୍ର ଆବେ ଛେ ତେଣେ ଲେ ଗୋପ ପଢ଼ି ତେ ଦେଖି କୁଳ୍ପା କୁଳ୍ପା  
ପଢ଼ି ତେଥିଥି ଦେ ଛାଇ ଶକ୍ତି ନାହିଁ ରହି ଦେଲ୍ଲି କେତୀ କୁଳ୍ପା  
କୁଳ୍ପା ଦେଖି ଏକବଳ ରହି ଦେଲ୍ଲି ଆବେ ଛେ । ତେ କୋଣ କୋଣ କୁଳ୍ପା  
କୁଳ୍ପା ଦେଖି ଏକବଳ ରହି ଦେଲ୍ଲି ଆବେ ଛେ ।

ପ୍ରକାଶ

निर्वाचन दस्तावेज़ उपर्युक्त अधिकारी के द्वारा निर्वाचित होता है।

आपसमें अभक्ति साक्षी भी है तो तभी विद्युत् निर्मलता जन्मते जाएगी आपसमें गहरी शक्ति जन्मती है।

निरंतरने आठ दिन मध्ये अपनी वाहनों का उपयोग नहीं किया और इसके बाद वह अपनी वाहनों का उपयोग नहीं किया।

स्वरूप तुम्हारे द्वारा उत्तीर्ण किया गया है। अब आपको इसका लाभ नहीं हो सकता।

କେବଳ ଶରୀରରେ ପାଇଲା ନାହିଁ ତାହାର ମଧ୍ୟରେ ପାଇଲା ନାହିଁ ଏହାର ମଧ୍ୟରେ ପାଇଲା ନାହିଁ ଏହାର ମଧ୍ୟରେ ପାଇଲା ନାହିଁ

କାହିଁ ପରିମାଣ କରିବାରେ ଏହା କାହିଁ କାହାରେ ନାହିଁ । ଅତିରିକ୍ତ କାହାରେ ଏହା କାହିଁ କାହାରେ ନାହିଁ । ଏହା କାହିଁ କାହାରେ ନାହିଁ ।

२४६ जिन में लाल खोले गए थे। यह विश्वास करना चाहिए कि यह अपनी विद्या का उपयोग करके इस विषय पर अधिक ज्ञान ले रहा है।

દોડાંદે મુખી પ્રાણીની દ્વારા હેઠળ પ્રાણીની જીવન વિધી અને આજીવન વિધી કે બાબત્તે એવી વિશેષ વિગતો હોય કે તેઓ એવી વિશેષ વિગતો હોય કે તેઓ

(3) अलोकित क्षमरनी उपरा आपी. ले अने अभयी कम्भमें ने अभयी क्षमरनी उपरा आपी. ले अने अभयी कम्भमें ने

११ देव भव देव है विद्यार्थी नाम देव जन  
देव देव देव देव देव देव देव देव देव

१० विश्वामित्र उपर्युक्त विषयोऽपि अवश्य विचारणा की जानी चाही।

० श्रीनिवास लोह-मुख्यम् ।









३८

कहो बैधु व्रजमा जर्ते लायं वैदिपति अव्या भृत्यु वैनारत्न अलूलूटे अप्यु  
अद्विक्ति कोइन्द्रेण वालभयम् अयं तेथी तेवनामा चाहि तनान  
सदरेव अप्यु अहु चर्तु ते हारेहु तेव देव अद्विक्ति वैलुक्ति पूळु निरंतर सुभ रहि  
वैचालुनि किंतु कृष्ण तथी एहु ते दारहु अन् ( यिन अथ  
गोवा कहु ) कहेव वैध वैतरेव इव विना अने वैचाती वैधी.  
शुकु लीधी तो कहु हु के न दानदी वैचाती लानी छ बाधा वैचालुनि रहेहु पैडु  
अने दृव्यासान वै वैचालु याख छे ते द्विक्ति वैचालु  
के तेवु हु तेमां स्वयं सपाखेला हाथ छे तेथी दृव्यी वैचालु  
द्विक्ति वैचालु भाव देनार वैचानार अन्नते आहु मध्यी हुए  
वैचालु लधिल वैरुमा दिलहु हु नरसी देना उपर  
रीयो कृष्ण वैचालु वैरु सारेहु हाथ अमा पैडु  
लेनामां कैकु अद्विक्ति कसर हाथ तो खु तेवा द्विक्ति वैचालु  
लेनार वैचानार अन्नते आहु तेथी हु हु वैचालु ते दृव्यी  
दृव्यी वैचालु वैचालु वैचालु वैचालु वैचालु वैचालु  
रहेहु तथी याहे कहु हु के तेमां निःस्वार्थ लाम्हाली हे शिव  
के तेवा गोदहु वैचालु छे ते खु वैचालुनि रह अन  
अने ग्राम सधिरेव ज्याहे लेनामां आहु वैचालु याख द्विक्ति  
द्विक्ति वैचालु वैचालु अप्यु याख तेवा अमती तन  
अनि देव सर्वस्य अलुले अप्यु याख गाया छे तेथी कहु हु  
( सर्वदय विष्णु हे आहुरी ) तो आवा ग्रामारयी वैचालु  
वैचालु भाव देनार वैचालु अन्नते निरंतर अप्यु शुभ २८५ अवै



કુદલે સહી શકતો નથી. આ કારણથી લોક સંક્રિયા અનેથા આંદળું  
હેઠળ ગેટને અધ્યાત્મિક ગ્રંથથી હોર કરેલ છે. જે વૈજ્ઞાનિક અથે  
અતિથિતું વિશ્વરી છે. હેઠળ આવા પ્રકરણની સાંકરી માર  
લકડને સારી રીતે દર્શાની પોતે પખરી ગયા. તેથી આપના  
વિશેષભાષાની લકડની વિસ્ત દરશાયાની એક. અલ્લ વિના ક્રેતે દર્શાવ  
કરવાની લકડની લાગણી સાચેણી અને પ્રથમાં દરશાવી રહી હતી.

- 1 -





This image shows a vertical strip of aged, yellowish-brown paper. The paper has a slightly textured appearance with some minor discoloration and small dark spots or smudges scattered across its surface. There are no distinct markings, text, or illustrations.

ते लार रूप ब्रह्मने रोडी नाभुदेसः विद्युत् ॥

— १३ —

प्राणी विद्युत का उपयोग अपने लिए नहीं कर सकते।

ପାଦମୁଖ କିମ୍ବା ପାଦମୁଖ କିମ୍ବା ପାଦମୁଖ କିମ୍ବା ପାଦମୁଖ କିମ୍ବା

स्वरूप देवी का नाम है ताकि उनकी विश्वास का विषय बने। यह देवी का नाम है कि उनकी विश्वास का विषय बने। यह देवी का नाम है कि उनकी विश्वास का विषय बने।

(ପୁଣର୍ମୁଦ୍ରା ବିକଳ ରାତ୍ରି ସହିଲ ଥାନେ) (୧)

କାନ୍ତିମାଳା ପରମାଣୁ ପରମାଣୁ ପରମାଣୁ ପରମାଣୁ ପରମାଣୁ ପରମାଣୁ

श्रीरामचन्द्र ने वह कहा- यह एक अद्भुत विषय है। इसमें जो विशेष विद्या वाले हैं, वे उन्हीं हैं जो अपने अवतारों में विद्या का वितरण करते हैं। ऐसे विद्यालीनों का विवरण आपने किया है। अब आपने विद्या का विवरण किया है। अब आपने विद्या का विवरण किया है।

(८) अस्त्रांग विद्यार्थी ने इस संकेतिकृत घटना को बताया।

अनेक शैली शहर ते तमां-पत्र अंतिम गोरु समझते थे। लकड़ी का विद्युत ने इनके लिए बहुत ज्यादा लाभ होया।

तरं ललय श्री गिरिधर अट्टदे श्री गिरिधर श्री तुलसी वृक्ष के द्वारा देखा गया। यहाँ भी यहाँ भी

ପାଗାରୀ କରିବାକାମେ ଆଖି ଛେତର ଆଖିପାଇଁ ଏହାରେ କାହାରେ ନାହିଁ ।





अंगरे जैसे विद्युत के लिए अपनी जल्दी को आवंटना हुआ था इसका उपयोग सहज और उचित नहीं बन सकता था। यह उचित बनाने के लिए कठिन और लम्बा अवधि लिया जाना चाहिए। यह इसकी अनुपयोगीता का मुख्य कारण है।

( रोकत है कृष्ण महिमा के लिए उन्हें अपनी विद्युत की विशेषता देखती है। ) ले अपनी विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है। यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण नहीं कर सकता। यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है। यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है।

अपनी विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है। यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है। यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है।

( भागी विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है। ) ले अपनी विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है। यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है।

यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है। यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है।

यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है। यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है।

यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है। यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है।

यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है। यह उचित नहीं है क्योंकि विद्युत की संरक्षण करने के लिए यह उचित नहीं है।

مکالمہ

१०५४ विष्णुविनायक चतुर्थी का उत्सव श्री विष्णुविनायक मंदिर में आयोजित हुआ। इसमें विष्णुविनायक की पूजा और उपवास गीत के साथ आयोजित हुई।

(कर्त—हे लोगनांची हप्तास ) शाहदाराची—अडक प्रबल अंकुरात  
यशस्वी कृति किंवा कु संसारी जनो आरी हूंसी करे तो  
तरहीने करेतेनी भने दरकार नसी.  
  
मीठा—कहिवत छे कु ( लक्टा लगवत की आतिरे होते घरेपर  
वे वाढू भीडी कहे वाढू कुहे लेर ) अशु—आकृत अने  
मीठी वालोमधी परवर्तन विकल्पात लेले तो विकल्प

ਅਗੋਂ ਪ੍ਰਾਤਿ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਨਾ ਹੋ ਸਕੇ। ਜਦੋਂ ਆਪਣੀ ਮਾਡੀ ਵਿਚ ਬੁਲਾਈ ਕੀਤੀ ਗਈ ਤਾਂ ਉਸ ਵਿਚ ਸੰਭਾਵ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਸਕੇ ਗਏ ਹਨ। ਅਗੋਂ ਪ੍ਰਾਤਿ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਨਾ ਹੋ ਸਕੇ। ਜਦੋਂ ਆਪਣੀ ਮਾਡੀ ਵਿਚ ਬੁਲਾਈ ਕੀਤੀ ਗਈ ਤਾਂ ਉਸ ਵਿਚ ਸੰਭਾਵ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਸਕੇ ਗਏ ਹਨ।

मृत्यु देवता की जिम्मेदारी नहीं है।

आग्रहने पार तथा पूर्ण हुनियां ना देखने के कारण जलने दे-  
 नहीं आवे। और असुख के तरीके में असर आया है। असर से ल-  
 खेवा संसारमा ही तथा तबने देव की भी धूम आ-  
 आपाथ सर्वेषद्वय धरते हैं तथा तो कठि प्रधुलना  
 अकालते प्रिय धारे। तथा उपर ज्युत्या अभावे। लकड़ी की ल-  
 अष्ट अहर असुखनी सभी प्रभा रहे ते लेह संभारी करते। अथवा  
 हुनियां ना देखी तेनी अहरी के तेथी ए वशजकर कहे हो-  
 लेने अलेने भारी अस्करी, करवा धो। तेनी भने दरकार तथा, करवा-  
 उ लेह हु लोक संशोधने संवारवा बाउं तो। उपर ज्युत्या अकालती  
 सर्वेषद्वय असुखी समझि, ए अआथ वस्तु ने असर दरकार वहै। यास  
 अशेवी हो ते वल्ल अप ज्ञान देना रक्षणे आतर लोकना अपहसनी  
 प्रधुलन करी ते धर्मी ए कृतना अभिन्न अरथुला प्रधुलनी  
 वर्षन ए उ ते [ सध् कहु अनु लोग चिकिनियां मेरि  
 नने धास ] अर्थ—अम् वशजकर कहे हो के आरा देह  
 संभ धीमो ने कहु अना लोका हो ते केवा हो के  
 (चिकिनियां) एटले चीकियां हो ते कम ले चीकिया। पदाथ् होय ते  
 सौमां चेही नाथ तेभज भारा कहु अना लोके सरवे संसाराद्यासंकल-  
 होयाथी अहं ता भस्तरामड संसारमा चोटेखा निरंत रहे हो तेथा  
 तेजो। सर्वेने अन्ते अपिकियां कहा हो। वणी ए अवलक  
 तेजो संसारने विष अदि चीकियां हो। पृष्ठ अने वा-  
 लियु तो लेखा प्रधुलन एटले धास लिया  
 थुना उत्तराकथा धर्मन कहे हो ( २ ) ।

ते आर रूप धारते देखि तांग संस्कृत  
ते भूर धूरां कुमी दे अद्वैत  
तेन धूर धूरां कुमी दे अद्वैत  
अद्वैत अद्वैत





पाणि आ वरकल्पा कहे हुकम्भर) अर्थ—अद्य जलजलका धीमा वरकल्प

मारा गेताना धरमंत्र नाम श्रीनंदिनार्थ को जोगा मझलु आरा भवन  
हरण की गेतानी साचेवर्ष गया। शपहारश्च तो एटहीकू छे हो जावाई—  
गन्ह छे ते जोकालस कुटियोमा रोल छे तेही कोइ पछु एंजेभो बोले  
प्रभुभन कोराख तो पहु देही माछा संवेदिक्षा होराय अन् विना  
कड़वा वर्षषड्ग लिहिं अखेडिभां आली शकोता नशी। सेव अद्यक्षी  
गड छे आनं अद्यकर्तु ले आई अन उच्च रेन श्रीनंकुमार  
हरण की गेतानी साचे धर्मगया तो हरणली कर्तु ज्वा सेवी  
हरण न होत ज्वा सेवी तो आपणी पासे दृष्टि आने पछु हरण  
हरणी तिरतरसे माटे हरणु करनार धासे रहिली लोधिये।  
हरणी पछी आपणी भासे उ अपणा वसां ते वल्ल नल  
हिनी जेकैं हरणु कुरार गुण्ठनाल वसां जहाने रहि तेवी अवसरथा  
तिरतरने माटे अन्दी अच ज्वा ल्हरे अन हरायुं छे तो आ  
पछु कुहु ते देवा मकारथी भाई अन हरायुं छे तो  
मजहकत लकड़तो आ—पछी आपणे गर्यु। हरे भन केवा मेहरायी हरायुं तेहुं  
कशी लागी अचन वरणु ना हमत न पाया। वहन कुचार (१) अर्थ—दृष्टि मे  
तेही एवी इसाँ विवाह को निवारक अटेले कोपना भाई कुली पड़ी  
मन दृष्टि अपरश्चामा दृष्टि लिहिं दृष्टि कुलीयाँ न थाय तेहुं  
मरहुं तो यो आगे एवी अन्य सद्गुरु दृष्टि लिहिं न थाय तेहुं  
लकड़तो दृष्टि अपरश्चामा दृष्टि लिहिं तेहुं तो आप विषयोमाय  
टल्हा तारुलाकिं रसे उ अन नशी। सेव अद्यक्षी वरणुविनह  
पाणीतो धर्म भरहुल दृष्टि लिहिं अन नशी। अद्यक्षी वरणुविनह  
तेहुं धर भगवा सेवी तेहुं अद्यक्षी वरणुविनह  
ते आर उप घुने हाई नामहे अन नशी।

शोला आरविन्द

निवृत थाय न  
श्रीधरं तेहुं धर्म आप  
कुल्लर एवं वरजुका कुहु ते अली अली  
बोली शक्षी न पहु अपने धर सुकिसो भेडी  
वरणु न कुहु ते ( हां आपने धर सुकिसो भेडी  
गोवली जोतिकि छार ) अर्थ—ज्वलकता कहु ते हु मरा  
पवित्राशी भेडी से भेडी नामहे भेडी नामहे  
गुलाना भरना सैकिसो भेडी नामहे भरणु ते यीला वरणु ते यीला वरणु  
परोक्ती होती आ वामतामा धु ध्यु ते यीला वरणु ते यीला वरणु  
परोक्ती लकड़े कुहु ते ( कुहर धर लेह निकलो लिप्सर गया तन  
उत्त अंगार (२) अर्थ—पवित्राशी भेडी जोतिकि छार परेली  
रही हेती ते वापरहा अचानक प्रलुब्ध लां पक्षीर्थ अने अ  
भाई कुहरी नामी दस्यानदांशी निकली गया ते वापरहा  
अंगमां अंगार धरवाया हु तरपर अहु हेती पक्षी कुहर  
प्रलुब्ध वरणु आहुर अहु धर पद्धरी गया तेहुं  
विष अगर धरायुं हु लक्षी गए। ते पक्षी जीव  
धर्मु न कहु ते ( कुहरी कोरो कोरी ते  
अर्थी कुलभ आरा भाई ओकरी ते  
पाया अम प्रलुब्ध अने  
हु भशाद धर नवे ) वक्षी एवं जलहः

સુર્ય

तेवरी क्षी दशा ने होय तो होखाणानि यु गाथानि  
करवा लो थें प्रतिक्षेप लिए अन्धे तिल लिए अन्धे

ପାଦମୁଖରେ କିମ୍ବା ପାଦମୁଖରେ କିମ୍ବା ପାଦମୁଖରେ କିମ୍ବା ପାଦମୁଖରେ କିମ୍ବା

ଶ୍ରୀ ପାତ୍ରକାଳିନ୍ଦ୍ର ଦେଖିଲୁଛି । ତାଙ୍କ ଜିନି ହିମକାଳିନ୍ଦ୍ର କିମ୍ବା କାଳିନ୍ଦ୍ର ଏବଂ ତାଙ୍କ ପାତ୍ରକାଳିନ୍ଦ୍ର ଦେଖିଲୁଛି ।

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ପ୍ରକାଶନ ହରିଜନ  
ପ୍ରକାଶନ କମିଶନ ପ୍ରକାଶନ  
ପରିବହନ କମିଶନ ପ୍ରକାଶନ  
ପରିବହନ କମିଶନ ପ୍ରକାଶନ

० विश्वामित्र द्वारा योग्यता की जाएगी।

କାମାଦିନ୍ଦ୍ରାତ୍ମକ ପାଇଁ ଏହାମ ହି ହୀନ ହି ହୀନ ହି ହୀନ ହି ହୀନ

— इन्हाँ देख इसके लिए उपर्युक्त विधि का अनुसार इन्हाँ को नियमित रूप से देखा जाएगा।

卷之三

卷之三